नये वर्ष में नवींनता भरे 18 महामन्त्र - दादी जानकी

1- 108 की वैजयन्ती माला में आना है तो एक बाबा दूसरा न कोई, फिर लगाओ बिन्दी, कोई भी बीती बात का चिंतन न चले। आठों शक्तियां सदा साथ देती रहें।

2- अपने को आत्मा समझने से लाइट हो जाते हैं, बाबा को देखने से माइट आ जाती है। निश्चय से सदा निश्चिंत रहना और निश्चित भावी पर अडोल रह प्रभु के गले का हार बन जाना है।

3- अन्तिम जन्म की यह अन्तिम घड़ियां हैं, विनाशकाल सामने खड़ा है लेकिन उसका डर वा भय नहीं है, चिंता भी नहीं है परन्तु हमारी स्थिति ऐसी हो जो अनेक आत्माओं को साक्षात्कार हो या स्वप्न आवे कि हमारे रक्षक कौन हैं?

4- तपस्या के साथ सेवा करनी है। तपस्या ने सेवा कराई है, पर त्याग वृत्ति के बिगर तपस्या नहीं होती और तपस्या सेवा सहज करा देती है।

5- मेरा हर संकल्प शुद्ध, शान्त, श्रेष्ठ और दृढ़ हो। कभी भी साधारण संकल्पों में समय वेस्ट न करें, व्यर्थ तो आ नहीं सकता। क्यों, क्या तो हमारे से हो नहीं सकता। कोई भी आत्मा के प्रति न प्रभाव है, न झुकाव है, न नफरत है।

6- हमारे संस्कार, हमारी नेचर बाप समान हो। सबके कल्याण के लिए हो। यह क्या करता, वह क्या करता... बाबा जाने। मुझे क्या करने का है वो सोचो और करो।

7- ब्रह्मचर्य में रहते हैं पर अपवित्र संकल्प भी न आयें, कोई देहधारी में दृष्टि वृत्ति भी न जाये। क्रोध के वश होकर किसी से कभी नाराज़ न हो जायें। चेहरे पर कभी लोभ मोह की रेखायें न हों।

8- एक हैं विघ्न डालने वाले, दूसरे हैं विघ्नों से घबराने वाले वा चर्चा करने वाले, विघ्न विनाशक कौन? विघ्नों का वर्णन करना मेरा काम नहीं, मेरी स्थिति ऐसी हो जो शान्ति से काम लूं और विघ्न-विनाशक बनकर रहूं।

9- कई अपनी मत को बड़ा राइट समझते हैं, सिद्ध करके राइट समझके औरों को भी उस मत पर चलाते हैं, इसमें बड़ा नुकसान है। श्रीमत की गहराई में जाओ तो सच्चाई, शान्ति, प्रेम का वातावरण बन जाता है।

10- आत्म-अभिमानी स्थिति से, शान्ति की शक्ति से आपस में जब मिलते हैं, तो हमारा सम्बन्ध बहुत स्नेह का हो जाता है, उसकी जो ताकत है वह बहुत सुखदाई है।

11- बुद्धि योग से बल मिलता है, याद हमको आज्ञाकारी, वफादार, इमानदार बनाती है। आज्ञाकारी बनने से बाबा की आशीर्वाद मिलती है।

12- अच्छी जीवन जीने के लिए मन में मुरली, मुख में मुरली हो। यह मुरली ही हमारे लिए प्राण है, जान है, ज्ञान है। आत्मा के ज्ञान से मन, बुद्धि से, बाबा की याद की शक्ति संस्कारों में चली गई है इसलिए अभी हमारा मन शान्त, बुद्धि शुद्ध और संस्कार श्रेष्ठ बन गये हैं।

13- ईश्वरीय परिवार के साथ रहते हुए भी हिसाब-किताब न बने। जरा भी कहाँ इगो, अटैचमेन्ट न हो। निमित्त मात्र सेवा अर्थ यहाँ हैं, बाकी रहते हैं अपने घर परमधाम में या अव्यक्त वतन में, जहाँ मेरा बाबा रहता है। बाबा से स्नेह और सकाश दोनों मिल रही हैं।

14- जितना हम वाणी में कम आयेंगे उतना मन्सा मनोवृत्ति और श्रेष्ठ सम्बन्ध की स्मृति अपने आप अनेकों की वृत्तियों को परिवर्तन में लायेगी।

15- भगवान ने जो स्नेह, समझ, शिक्षा दी है, उस पर चलना है। किसी के लिए कभी यह ख्याल नहीं आये कि ''यह बदलने वाला नहीं है''। कभी दिलशिकस्त न अपने लिये होना है, न किसी के लिये होना है। सदा ही दिल को शाह दिल, फ्राक दिल बनाना है।

16- जो भगवान कहता है वही करना है, अपनी मर्जी से कुछ नहीं करना है। वही करना है जो बाबा करा रहा है। इसमें भी निमित्त भाव रखने की गॉड ने गिफ्ट दी है।

17- अभी हम लोगों को अलबेलाई में समय गंवाना शोभता नहीं है। रात हो या दिन हो, जागते हैं या सोते हैं, पर स्थिति ऐसी हो जो जरा भी हलचल न आये। और कोई बात मुख से न निकलें, न मन में संकल्प आये। बुद्धि न मनी में जाये, न मान में। ऐसा हर एक अपने आपको बना लो।

18- अमृतवेले का जो महत्व है, उसकी बड़ी खींच होती है। अमृतवेला कुछ भी हो जाये मिस नहीं होने देंगे, थर्ड सण्डे का योग भी कभी मिस नहीं किया होगा। सच्ची दिल से पुरुषार्थ करने वाले कोई बहाना नहीं देते, थोड़ा भी लेट नहीं करते, ट्रैफिक कन्ट्रोल के समय पर स्वतः अटेन्शन जायेगा।